माननीय राज्यपाल हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 6 फरवरी, 2016 को दीनबंधु छोटूराम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मुरथल (सोनीपत) के दीक्षांत समारोह में दिया गया भाषण।

हरियाणा के शिक्षा मंत्री प्रोफेसर रामबिलास शर्मा जी, हरियाणा सरकार की सामाजिक न्याय एवं महिला और बाल विकास मंत्री श्रीमती कविता जैन जी, हरियाणा राज्य कृषि विपणन बोर्ड की चेयरमैन श्रीमती कृष्णा गहलावत जी, मेरी सचिव और आयुक्त अम्बाला मण्डल, श्रीमती नीलम कासनी जी, IIT खड़गपुर के पूर्व निदेशक जिनका convocation address हम सबने सुना, पदमश्री प्रोफेसर श्री के0 एल0 चोपड़ा जी, इस विश्वविद्यालय के कुलपति श्री राजपाल दहिया जी, रजिस्ट्रार श्री आर0 के0 अरोड़ा जी, आप सबको आशीर्वाद देने के लिए अन्य विश्वविद्यालयों के कुलपति भी यहाँ उपस्थित हैं–महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक के कुलपति श्री बी0 के0 पुनिया जी, BPS महिला विश्वविद्यालय खानपुर कलां की कुलपति श्रीमती आशा कादयान जी, इस विश्वविद्यालय के academic council and Executive council के सभी सदस्य महानुभाव, faculty members, अन्य आमंत्रित महानुभाव, प्रशासनिक अधिकारीगण, कुछ अभिभावक भी उपस्थित होंगे, और जिन सबको हम आशीर्वाद देने के लिए आए हैं ऐसे मेरे प्रिय विद्यार्थी, भाईयो और बहनो!

मेरे सामने दो–तीन दुविधाएँ हैं। एक तो मैं आप सबके बीच में डेढ़ घंटे देर से आया हूँ। देर से आने का कारण मैं नहीं था, मौसम था। मुझे हवाई मार्ग से आना था और वह मौसम के अनुसार होता है। दूसरे, इस अवसर पर जो कुछ आपको मिलना चाहिए था–मार्गदर्शन, उद्‌बोधन, ज्ञान, आशीर्वाद वह इतने अच्छे रूप में मिला है कि मैं दुविधा में हूँ कि कुछ बोलूं अथवा न बोलूं। जो प्रोफेसर के0 एल0 चोपड़ा जी का convocation address था, बहुत सुंदर उद्‌बोधन था। युनिवर्सिटी के कुलपति महोदय ने भी जो रिपोर्ट प्रस्तुत की है, कार्यक्रम बताए हैं, उसमें भी बहुत सी बातें सम्मिलित थीं। हमारी सरकार के दोनों मंत्रीगण व्यावहारिक बातें बोले, सुन्दर बातें बोले।

एक आखिरी दुविधा और मेरे सामने है कि मेरे पास आप सबको सुनाने के लिए जो भाषण है वह अंग्रेजी में है। I have got a speech in English. लेकिन मुझे भाषण तो देना नहीं है। मुझे तो आपको आशीर्वाद देना है।

और आशीर्वाद कभी भी लिखित तौर पर नहीं होता। आशीर्वाद कभी कागज पर लिखा हो ओर वो पढ़ दिया जाए वह आशीर्वाद नहीं होता। वह तो communication होता है। Communication of history, communication of words, that is not blessing. फिर आशीर्वाद दिया जाए और वही भी अंग्रेजी में तो यह भी अजूबा है। Blessing should be extended in our own languages. They are understandable and they are more effective. क्योंकि आशीर्वाद का संबन्ध भावनाओं से होता है, बुद्धि से नहीं, हृदय से होता है। आप कोई बात अंग्रेजी में बोलिए तो वह बात आपके हृदय में नहीं उतरेगी। बुद्धि में तो उतर जाएगी, समझ में तो आ जाएगी लेकिन हृदय में नहीं उतरेगी। आशीर्वाद हृदय से दिया जाता है ताकि आप आत्मसात कर लें। उसमें पूरी तरह सराबोर हो जाएं। हृदयंगम कर लें। यह हिन्दी का शब्द है— To absorb in the heart.

आप किसी महिला को लेडी कहिए और उसी महिला को आप बहन कहिए, कितना फर्क है? लेडी शब्द बुद्धि में जाकर अटक जाएगा और बहन कहते ही भावना में जाकर टकराएगा। एकदम हृदय को प्रभावित करेगा। उसकी आपकी तरफ देखने की दृष्टि बदल जाएगी और बहन कहने के बाद आपकी भी देखने की दृष्टि बदल जाएगी। यह मतलब होता है language का। आप माँ को मदर कहिए कुछ समझ में नहीं आएगा कि मदर का मतलब क्या होता है। उसी को आप माँ कहिए। एकदम फर्क होता है। इसलिए दुविधा है मेरे सामने कि क्या करूं यह अंग्रेजी वाली स्पीच पढ़ दूं या फिर हिन्दी में बोलूं।

एक तो हम सबके लिए यह रेखांकित करने वाला दिन है, महत्वपूर्ण दिन है, शुभ दिन है, मंगलमय दिन है, जब आप एक पड़ाव पार करके दूसरे पड़ाव पर जा रहे हैं और हम सब बड़ी आशा भरी निगाहों से आप सबके चेहरों की तरफ देख रहे हैं कि आप अपना अगला जीवन कैसे बिताएंगे ? आप कैसे आगे जाएंगे ? इतनी सारी बातें आपने सुनीं, मैने भी सुनीं। लेकिन इन सबके बाद मैं आप सबको एक बात कहना चाहता हूँ कि आप कहीं भी रहिए, इस राज्य में रहिए या उस राज्य में रहिए, हम तो कहते हैं कि इस देश में रहिए या विदेश में रहिए, कहीं भी रहिए यह पूरी धरा हमारी है। यह पूरी वसुंधरा हमारी है। यह पूरी पृथ्वी हमारी है। वसुधैव कुटुम्बकम। पूरी वसुधा हमारा परिवार है। आप कहीं भी रहिए? लेकिन

भारत को मत भूलिए। इसके स्वाभिमान को हमेशा जीवंत रखिए। भारत के स्वाभिमान को कभी मत लजाइए। इस संदेश को हमेशा ध्यान में रखिए।

हमारे रामबिलास जी स्वामी विवेकानंद जी की बात कर रहे थे। स्वामी विवेकानंद जी 5–6 वर्ष तक 1893 से लेकर 1897 तक कई देशों में घूमे। लेकिन जब घूमने के बाद समुद्र के रास्ते से आकर रामेश्वरम में उतरे तो उन्होंने सबसे पहले क्या किया? सबसे पहले वे भारत माँ की मिट्टी में लोट–पोट हो गए और मिट्टी से माथे पर तिलक किया और उन्होंने भारत मां से कहा कि विदेश की भूमि पर घूमने के बाद अगर मैं कुछ भूला हूँ, अगर विस्मरण हुआ हूँ, कहीं गलत रास्ते पर गया हूँ, कोई गलत विचार अगर मेरे मन में आया हो तो मुझे आशीर्वाद दे ताकि मैं सब भूल जाऊं। यह वही भाव है।

मुझे लगता है कि इसी को ध्यान में रखते हुए नरेन्द्र मोदी जी जब लोकसभा का चुनाव पहली बार लड़कर पहली बार प्रधानमंत्री बनकर लोकसभा में पहुँचे तो उन्होंने सबसे पहले क्या किया ? आपने दूरदर्शन पर, टी0वी0 पर और अन्य चैनलों पर देखा होगा। मैं भी देख रहा था। ऐसा कभी किसी ने नहीं किया जो नरेन्द्र मोदी जी ने किया। जैसे ही दरवाजे पर पहुँचे साक्षात दंडवत प्रणाम किया। यह संसद का स्वाभिमान है वैसे ही देश का स्वाभिमान है। इसको कभी मत भूलना। अगर आप इसको नहीं भूलोगे तो कहीं पर भी आप जाओगे आप के मन में कभी छोटापन नहीं आएगा, कभी संकीर्णता नहीं आएगी, कभी हीन भाव नहीं आएगा। आपका चेहरा हमेशा ओज से तगतमाएगा।

स्वामी रामतीर्थ का नाम सुना होगा उन्होंने MSC किया था मैथेमैटिक्स से। लेकिन वे संन्यासी हो गए। एक बार वे इंग्लैंड में गए। इंग्लैंड में उनके शिष्य थे, देश के भी थे विदेश के भी थे। उनके शिष्यों ने बड़े आग्रहपूर्वक स्वामी रामतीर्थ से कहा कि हम आपको अंग्रेजी वेशभूषा में देखना चाहते हैं कि आप कैसे लगते हो? शिष्यों का आग्रह स्वामी रामतीर्थ जी टाल नहीं पाए। उन्होंने कहा देख लो कैसे लगते हैं। अंग्रेजी वेशभूषा उनको पहनाई गई। उनको जूते पहनाए, मौजे पहनाए, पैंट पहनाई, कोट पहनाया, कोट के अंदर शर्ट थी और फिर टाई बाँधी। यही तो अंग्रेजी वेशभूषा है जिसमें उनके शिष्य उनको देखना चाहते थे। लेकिन इतना सब होने के पश्चात जैसे ही टोप लाए, हैट लाए, सिर पर रखने के लिए स्वामी जी ने उसको फैंक दिया कि यह नहीं हो सकता। मैं अंग्रेजी वेशभूषा के जूते पहन सकता

हूँ, पैंट और कोट पहन सकता हूँ, लेकिन सिर पर अंग्रेजी वेशभूषा नहीं रख सकता। यह देश का स्वाभिमान है, यह देश का प्रतीक है।

विचार के प्रति, किसी देश के प्रति, किसी आस्था के प्रति स्वाभिमान आता कब है? सिर्फ मैंने कह दिया कि स्वाभिमान होना चाहिए, आप देश के बारे में स्वाभिमान रखिए, कहीं भी जाइए। तो ऐसे आ जाएगा क्या? नहीं आएगा, उसके लिए आवश्यक है इस देश को जानिए। भारत को जानिए। यह भारत कैसा है? दुर्भाग्य है कि भारत को बताने का syllabus में provision नहीं है। भारत के विचार को बताने का कहीं पाठ्यक्रम में provision नहीं है। यह तो हमारे देश के गुरू हैं जो अपने व्यवहार से, अपने आचरण से, अपनी बातों से, सत्संग से, प्रार्थना से, विचारों से बता देते हैं। जिन values की चर्चा हमारे चोपड़ा जी कर रहे थे वे कौन सी values थीं ? वे syllabus की values नहीं हैं। हमारे कुलपति महोदय भी जो ऋग्वेद की एजुकेशन की परिभाषा बता रहे थे– Self reliance, selfless man यह पाठ्यक्रम में कहाँ आता है? self reliance, selfless man. आपको पाठ्यक्रम में तो वह पढ़ाया जाता है कि आप selfish हो जाते हैं। आपको अपनी पड़ी रहती है। अपनी इच्छाओं की संतुष्टि की रहती है। 'मैं' पूरी तरह से आपके अंदर घर कर जाता है। आप दूसरे के बारे में सोचते ही नहीं हैं। मेरा क्या और मेरा नहीं तो मुझे क्या, यह संस्कृति घर कर जाती है। इसलिए वे बातें आज पाठ्यक्रम में नहीं हैं।

इसलिए मैं कह यह रहा था कि भारतवर्ष को जानें कैसे ? भारत को जानना बहुत जरूरी है। जो भारत को जान लेता है वह पूरी दुनिया के अंदर डंका बजाता है। आखिर स्वामी विवेकानंद जी 1893 में अमेरिका में जाकर क्यों विश्वविजेता हुए? क्यों उन्होंने वेदांत का डंका बजा दिया ? क्यों वहां सब लोग शरणागत हो गए ? पूरे भाषण में pin drop silence था। ऐसा क्यों हो गया? क्योंकि वे भारत को जानते थे। स्वामी विवेकानंद में भारत पूरी तरह से भरा हुआ था। वे भारत से ओतप्रोत थे, सराबोर थे। इसलिए गुलाम देश होने के पश्चात भी वे पूरे विश्व को हराकर आए। इसलिए भारत को जानना बहुत जरूरी है।

इसीलिए रविन्द्रनाथ टैगोर जिनकी अपनी गीतांजली कविता को नोबेल पुरस्कार मिला, उन्होंने बहुत अच्छी बात कही है। हम सबको कही है। आप भारत को जानना चाहते हो तो स्वामी विवेकानंद को जानो। स्वामी

विवेकानंद को बिना जाने आप भारत को नहीं जान सकते। इसलिए हम सबको राजीव गाँधी जी, जो पूर्व प्रधानमंत्री थे, उनका आभारी होना चाहिए। उन्होंने सबसे पहले colleges के अंदर स्वामी विवेकानंद को introduce किया। आज जो colleges के अंदर पूरे देश में राष्ट्रीय युवा दिवस मनाया जाता है, उनकी जयंती का दिन मनाया जाता है। राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में पूरे सप्ताह भर कार्यक्रम होते हैं, संगोष्ठियाँ होती हैं। वे पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गाँधी की देन हैं। हमारा युवा जो स्वामी विवेकानंद को नहीं जानता वह भारत का युवा कैसे हो सकता है? उसको भारत के बारे में कैसे प्रेरणा मिल सकती है? उसके मन में कैसे भारत के बारे में स्वाभिमान जाग सकता है? इसलिए आप भारत को जानिए।

विश्व में कई राष्ट्र हैं। 193 राष्ट्र तो संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य हैं। और भी राष्ट्र हैं। लेकिन कोई राष्ट्र भारत की बराबरी नहीं कर सकता। कोई राष्ट्र इसकी लाइन में नहीं खड़ा हो सकता। किसी राष्ट्र की इससे तुलना नहीं की जा सकती। It is matchless. ऐसा कोई अन्य राष्ट्र नहीं है।

जितने भी विश्व के अंदर राष्ट्र हैं उनका जन्मदाता कोई न कोई राजा हुआ है। अन्य राष्ट्रों का जन्म तो अभी–अभी हुआ है। यूरोप में जितने भी राष्ट्र हैं सब 18वीं शताब्दी के बाद आए। लेकिन क्या आप बता सकते हैं भारतवर्ष के बारे में कि यह राष्ट्र कब आया। हम सबको इतिहास में उल्टा पढ़ाया गया है। विश्व के अंदर भारतवर्ष के बारे में कहा गया है कि यह तो सपेरों का देश है, यह तो जादूगरों का देश है, यह तो पाखंडियों का देश है। आर्य लोग भारत के बाहर से आए हैं। यह हमको पढ़ाया गया है। सही तो पढ़ाया नहीं गया है। पढ़ाया गया तो उल्टा पढ़ाया गया।

लेकिन भारत विश्व में बिल्कुल अलग, अनूठा, अलग प्रकार का राष्ट्र है। यह राष्ट्र किसी राजा के द्वारा नहीं बनाया गया। इसलिए यह राष्ट्र political नहीं है। यह राष्ट्र राजनीतिक नहीं है। इसका जन्मदाता कोई राजा नहीं है। अथर्ववेद के अंदर एक श्लोक आता है जिसका अर्थ यह है कि इस राष्ट्र के जन्मदाता संत हैं जिन्होंने तपस्या करके इस राष्ट्र को जन्म दिया। इसलिए इस राष्ट्र के बारे में यह कभी नहीं कहा गया कि यह राजनीतिक राष्ट्र है। It is originated by a king यह कभी नही कहा गया।

भारत राजनीतिक राष्ट्र नहीं cultural राष्ट्र है। यह सांस्कृतिक राष्ट्र है। भारतवर्ष की संस्कृति चिरंतन है। यह कभी समाप्त नहीं होती। आप

जरा विश्व के अन्य राष्ट्रों को देखो अब सब समाप्त हो गए। उनकी पुरानी पहचान ही खत्म हो गई।

यूनान, मिश्र, रोमां सब मिट गए जहाँ से,

अब तक मगर है बाकी नामोनिशां हमारा।

कुछ बात ही है ऐसी हस्ती मिटती नहीं हमारी,

सदियों रहा है दुश्मन, दौरे जहाँ हमारा।

यह सर इकबाल का गाया हुआ है। कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी। ऐसी कौन सी बात है जिसके कारण हमारी हस्ती नहीं मिटती। वह बात यह है कि यह राष्ट्र राजनीतिक है ही नहीं। कोई भी राजा यहाँ पर आता रहे, यह राष्ट्र समाप्त नहीं हो सकता क्योंकि यह राष्ट्र राजनीतिक है ही नहीं। यह तो cultural है। यह तो सांस्कृतिक है। संस्कृति की जो धारा प्रारंभ से बही है वही अब तक बहती चली आ रही है। अनवरत बह रही है और जब तक राष्ट्र की संस्कृति जिन्दा रहेगी राष्ट्र जिन्दा रहेगा।

इसलिए भारतवर्ष के अंदर राजाओं को महत्व नहीं है, महत्व साधु–संतों को है, महत्व संन्यासियों को है। अपने यहाँ तो राजा के ऊपर भी धर्मगुरू होता था। उसका डंडा चलता था। राजा कोई भी गलती करता था तो वह आकर उसको टोकता था कि नहीं यह आप नहीं कर सकते। चन्द्रगुप्त मौर्य को राजा चाणक्य ने बनाया था। राजा बनने के बाद जब चन्द्रगुप्त मौर्य का भी दिमाग खराब हुआ तो चाणक्य ने आकर कहा कि समझने की कोशिश करो कि तुम क्या हो? तुमको बनाने वाला मैं हूँ। ठीक से चलोगे तो ठीक है नहीं तो कुर्सी से उतार के दूसरे को बैठा देंगे।

यह इस देश की संस्कृति है। इसलिए यहाँ culture प्रभावी है। सामाजिक मूल्य यहाँ पर प्रभावी हैं। Moral values यहाँ पर पर प्रभावी हैं। यह चीज और किसी राष्ट्र में आपको नहीं मिलेगी। इसलिए रामबिलास जी कह कह रहे थे Eat, drink and be marry यह culture है और राष्ट्रों की। Eat, drink and be marry इससे ऊपर कोई सोच ही नहीं पाता। अन्य राष्ट्रों के अंदर जो व्यक्ति हैं वे इच्छाओं के पुतले हैं। अपनी इच्छाओं पर वे मरते हैं। इच्छाओं की संतुष्टि में ही उनको सुख मिलता है। और भारत ऐसा अजीब राष्ट्र है जो इच्छाओं का दमन करता है। यह जितेन्द्रीय बनाता है। जो इच्छाएँ इन्द्रियाँ पैदा करती हैं उन पर विजय प्राप्त करता है,

उनका दमन करता है। यह ऐसा राष्ट्र है जो इच्छाओं का दमन करता है। गीता का सारतत्व है–निष्काम, निष्काम कर्म। यह शायद हिन्दी में नहीं समझ में आ रहा होगा। अंग्रेजी में इसका अर्थ है desireless activity. अपने यहाँ उस activity को श्रेष्ठ माना जाता है जो desireless होती है, जिसमें आपकी इच्छा नहीं होती।

अब जरा इच्छाओं पर नियंत्रण करके तो देखो। आप नर से नारायण बन जाओगे। आप दुख में भी सुख का अनुभव करेंगे। सुख और दुख से ऊपर चले जाओगे, अगर आपकी इच्छाएँ ही नहीं हैं तो। ये इच्छाएँ ही आदमी को परेशान करती हैं। इसलिए अपने देश की संस्कृति में इच्छाओं की संतुष्टि को प्रमुख नहीं माना गया है। इच्छाओं का दमन, इच्छाओं पर विजय, इच्छाओं को कम करना यह प्रमुख माना गया है, desireless activity. ये चीजें जब तक आप नहीं जानोगे तब तक अपने राष्ट्र के प्रति स्वाभिमान नहीं रह सकता।

दूसरे यह देश ऐसा है जिसके अंदर एक life style है, जीवन पद्धति है। इस राष्ट्र की जीवन–पद्धति बिल्कुल अलग है। इस राष्ट्र की जीवन पद्धति ऐसी है जिसके अनुसार जब आदमी चलता है तो सीधे नर से नारायण बन जाता है। वह मोक्ष को प्राप्त करता है। जो सर्वनियंता है, जो सर्व शक्तिशाली है, उसको खुदा कहिए, GOD कहिए, अल्लाह कुछ भी कहिए, उसके साथ उसका एकाकार हो जाता है।

नरेन्द्र ने स्वामी विवेकानंद बनने से पहले अपने गुरू से यही तो पूछा था कि भगवान को आपने देखा है? अगर ठाकुर रामकृष्ण परमहंस कहते कि मैने नहीं देखा है तो नरेन्द्र उनका शिष्य नहीं बनता। आजकल के लोगों से तो अगर कोई इस तरह का कोई प्रश्न पूछे तो कहेंगे कि इसका दिमाग खराब हो गया है, बेवकूफ है, तुझे क्या करना है भगवान से। Eat, drink and be marry, क्यों भगवान की चिंता कर रहे हो। लेकिन ठाकुर रामकृष्ण परमहंस उसको बोलते हैं कि हाँ मैंने भगवान देखा है और ऐसे देखा है जैसे तू मुझे देख रहा है और मैं तुझे देख रहा हूँ। तू अगर दर्शन करना चाहता है तो मैं दर्शन करा सकता हूँ। यह कहकर उन्होंने नरेन्द्र के माथे पर एक उँगली रखी और उनके पूरे शरीर में करंट दौड़ गया। नरेन्द्र को विश्वास हो गया कि यह devine पावर है, इनमें कोई ताकत है। यह इस देश की जीवन–पद्धति है। यह पद्धति आपको कोई नहीं बताता।

मैं आपको एक घटना सुनाता हूँ। संस्कृत का प्रचार–प्रसार अपने देश में इतना नहीं हुआ जितना विदेशों में हुआ है। संस्कृत में ग्रंथ हैं लेकिन उनके ऊपर शोध, PHD विदेशों में लोगों ने की है। जर्मनी का एक प्रोफेसर जो संस्कृत का था उसने जब भारत का संस्कृत का साहित्य पढ़ा तो उसको एक बात समझ में आई कि यह देश ऐसा है जहाँ पर हम जाकर तपस्या करते हैं, साधना करते हैं तो भगवान के दर्शन हो सकते हैं। वह संस्कृत का प्रोफेसर जो जर्मनी का था, उसके ध्यान में आया। उसने अपने जीवन का संकल्प ही यह कर लिया, यही बना लिया कि चलो भारतवर्ष में जाते हैं। यहां आकर लोगों से पूछा कि कहाँ जाकर साधना करूं तो लोगों ने कहा गंगा के किनारे, हरिद्वार में जाओ, वहाँ पर साधना करो। लोग कहते हैं कि साधना करने से भगवान के दर्शन हो सकते हैं। उसने वही किया। हरिद्वार में आकर गंगा के किनारे उसने साधना की।

कई वर्ष बीत जाने के बाद भगवान को लगा कि इसकी साधना में कोई दोष नहीं है, कोई त्रुटि नहीं है, पूरा समर्पण है, ईमानदारी से यह साधना कर रहा है। लेकिन अब क्या किया जाए? तो एक दिन रात को भगवान ने आकर उसको दर्शन तो नहीं दिए लेकिन उसको कहा कि तेरी साधना में कोई गलती नहीं है, साधना में कोई दोष नहीं है। बस एक ही कमी तेरे अंदर है और वह यह है कि तूने जन्म जर्मनी में लिया है, भारत में नहीं। जब तक तू भारत में जन्म नहीं लेगा, तब तक तुझे ईश्वर के दर्शन नहीं हो सकते। उस जर्मनी के प्रोफेसर ने हरिद्वार में गंगा नदी में समाधि ले ली और भगवान से प्रार्थना कि मैं समाधि ले रहा हूँ आप मुझे पुनर्जन्म दीजिए, भारतवर्ष के अंदर दीजिए और उसके पश्चात मैं फिर तपस्या करूँगा, फिर आप मुझे दर्शन दीजिए। यह भारत इतनी श्रेष्ठ भूमि है।

इसको अगर हम जानेंगे तो भारतवर्ष के बारे में स्वाभिमान जगेगा। 21वीं शताब्दी का तो सपना ही यह है। आप देख रहे हैं देश के प्रधानमंत्री कितने देशों में जा रहे हैं। हर महीने दो देशों में चले जाते हैं। कहीं भी जाते हैं तो एक कार्यक्रम जरूर करते हैं। उसमें भारतवासियों को बुलाते हैं। जिस देश में जाएँगे वहाँ पर रहने वाले सब NRI's को बुलाएंगे, भारतीयों को बुलाएंगे। आपने देखा है टी0वी0 पर, चैनल पर, जब वे कार्यक्रम करते हैं तो किसी भी स्थान पर करें। लोग कम नहीं पड़ते स्थान कम पड़ता है। कितने लोग हैं विदेशों में भारत के ? किसी भी स्थान पर जब कार्यक्रम होता है तो जितने लोग उस स्थान पर अंदर होते हैं उतने ही बाहर होते

है। वह दृश्य देखकर ऐसा लगता है कि अगर ये सब भारतवासी जो विदेशों में हैं, वे विदेश के कानून को मानें, विदेश की बात को मानें, उस देश के भक्त होकर रहें जहाँ वे रहते हैं। लेकिन भारत को याद रखें। भारत के स्वाभिमान को याद रखें। भारत की संस्कृति को याद रखें। भारत की जीवन–पद्धति के अनुसार आचरण करें। पूरे विश्व के लोग अगर इस बात को लेकर खड़े हो जाते हैं तो 21वीं शताब्दी में भारतवर्ष का नाम, जो कभी 17वीं शताब्दी में इंग्लैंड का लिया जाता था, उनके राज्य में कभी सूर्यास्त नहीं होता था, एक सांस्कृतिक राज्य भारतवर्ष का पूरे विश्व में होगा। विश्व में परचम लहराएगा।

मैं इतनी लंबी–चौड़ी बात इसलिए कह रहा हूँ कि यह सब हमारे युवाओं के हाथ में है। आप अपने आपको बहुत भाग्यशाली समझिए कि आप कॉलेज में पढ़कर फिर ये उपाधि प्राप्त कर रहे हैं। आज देश में कितने सारे युवा हैं जो कॉलेज में नहीं आ पाते। परिवार का, आपके गुरूओं का, संपूर्ण समाज का आपके ऊपर बहुत बड़ा ऋण है। उस ऋण को उतारने के लिए अगर आप आगे आते हैं तो 21वीं शताब्दी जो भारतवर्ष की शताब्दी बन सकती है, हम उस ओर बढ़ रहे हैं, उसमें आपका बहुत बड़ा योगदान हो सकता है।

बात तो मुझे और भी करनी थी लेकिन समय अनुमति नहीं देता है। इन्हीं शब्दों के साथ आप स्वयं को जानिए, अपने मन के अंदर कोई संकल्प जगाइए और आगे बढ़िए। 21वीं शताब्दी आपकी है। आपके कारण देश निश्चित रूप से आगे जाएगा। जैसा देश के प्रधानमंत्री ने कहा था कि अगर हम एक कदम आगे जाते हैं तो देश 125 करोड़ कदम आगे जाएगा। लेकिन शर्त यह है कि 125 करोड़ लोग एक कदम आगे रखेंगे। अगर कुछ ऐसे लोग हो गए जो चलेंगे ही नहीं, कुछ लोग ऐसे हैं जो उल्टे चलेंगे तब तो 125 करोड़ में से संख्या कम हो जाएगी। इसलिए आप सबसे मैं इस अवसर पर यह अपेक्षा करता हूँ कि आप जरूर आगे जाएँगे, सब एक कदम आगे बढ़ाएंगे। एक संकल्प के साथ, भारत के स्वाभिमान के साथ जीवन में उतरेंगे। भगवान आपको जरूर सफलता दे।

बहुत बहुत धन्यवाद!